05/05/2026

हिन्दुस्तान www.livehindustan.com

अपना

ऊसर भूमि पर 'सोना' उगलेगी के-1910

खास

- चंद्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय ने विकसित की गेहूं की नई प्रजाति
- कम पानी और ऊसर में सामान्य खेतों की तरह देगी 40 कुंतल पैदावार
- कीटों का प्रभाव होगा कम, गेहूं की प्रमुख बीमारियों से सुरक्षित रहेगी प्रजाति

■ अभिषेक सिंह

कानपुर। ऊसर भूमि पर अब कानपुर की के-1910 ''सोना'' उगलेगी। गेहूं की यह नई प्रजाति विशेष रूप से ऊसर भूमि के लिए तैयार की गई है। इस प्रजाति को चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। यह प्रजाति ऊसर भूमि में भी सामान्य की भांति 40 कुंतल प्रति हेक्टेयर तक पैदावार देगी।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. सोमवीर सिंह, डॉ. पीके गुप्ता, डॉ. विजय यादव व ज्योत्सना ने लंबी रिसर्च के बाद ऊसर भूमि के लिए गेहूं की यह विशेष प्रजाति विकसित की है। ऊसर भूमि वाले किसान कम उत्पादन से अधिक परेशान रहते हैं। साथ ही, पानी का अधिक खर्च, कीटों व बीमारियों का हमला भी उन्हें नुकसान पहुंचाता है। जिसे ध्यान में रख गेहूं की के-1910 प्रजाति विकसित की है। यह प्रजाति ऊसर भूमि के साथ सामान्य खेतों में भी अच्छी पैदावार देगी। 125 से 130 दिन पक कर फसल पक कर तैयार हो जाएगी। यह प्रजाति भूरा, पीला व काला रस्ट के प्रति पूरी तरह अवरोधी है। कानपुर की इस प्रजाति को राज्य बीज विमोचन समिति से अनुमति मिल चुकी है। अगले वर्ष से इस प्रजाति के बीज मिलने लगेंगे।

66 विवि के वैज्ञानिक निरंतर अनुसंधान कर किसानों के उपयोगी व जलवायु अनुकूल प्रजातियां विकसित कर रहे हैं। गेहूं की यह प्रजाति ऊसर भूमि में अधिक उत्पादन देगी, जिसका लाभ किसानों को मिलेगा। वैज्ञानिकों की टीम जलवायु परिवर्तन को लेकर भी अनुसंधान कर जल्द नई प्रजाति विकसित करेगी। -डॉ. संजीव गुप्ता, कुलपति- सीएसए विश्वविद्यालय

प्रमुख तथ्य

- गेहूं की प्रजाति का नाम - के-1910
- फसल पकने का समय - 125 से 130 दिन
- फसल का उत्पादन - 40 कुंतल प्रति हेक्टेयर
- खासियत - पानी की बचत, रोगमुक्त
- खास क्षेत्र - बुंदेलखंड या ऊसर भूमि वाले